

# OUTLINE OF THEOLOGY- INTRODUCTION & BIBLIOLOGY - HINDI

धर्मविज्ञान की रूपरेखा

डॉ. डॉमिनिक मार्बनियांग

[rdsmarb.webs.com](http://rdsmarb.webs.com)

परिचय

धर्मविज्ञान का अर्थ

धर्मविज्ञान मसीही सिद्धांत एवं विश्वास का अध्ययन है। इसका उद्देश्य मसीही धर्मविज्ञान की विषयबद्ध व्याख्या देना होता है।

धर्मविज्ञान की आवश्यकता

1. विश्वास की स्पष्ट समझ हेतु
2. विश्वास का बौद्धिक एवं सुस्पष्ट मंडन हेतु (1Pet. 3:15)
3. परमेश्वर द्वारा प्रकाशित सत्यों का सुव्यवस्थित प्रस्तुति हेतु (2 Tim. 2:15)
4. अपसिद्धांत एवं गलत शिक्षाओं से सुरक्षा हेतु (Mat. 22:29; Gal. 1:6-9; 2Ti. 4:2-4)
5. मसीहियों की आत्मिक उन्नति एवं परिपक्वता (Eph. 4:14)

धर्मविज्ञान के विभाग

1. बाइबिलीय (Exegetical) धर्मविज्ञान: इसका अध्ययन अक्सर पुराने नियम का धर्मविज्ञान एवं नए नियम का धर्मविज्ञान के रूप में और बाइबिल की व्याख्या पर आधारित होता है।
2. ऐतिहासिक धर्मविज्ञान: धर्मविज्ञान के दृष्टिकोणों का ऐतिहासिक रूप में उत्पत्ति एवं विकास का अध्ययन।

3. विषयबद्ध धर्मविज्ञान: इसमें हम धर्मविज्ञान के विषयों का व्यवस्थित अध्ययन करते हैं।

4. व्यावहारिक धर्मविज्ञान: धर्मविज्ञान का अनुप्रयोग, विषय: प्रचारशास्त्र, पास्तरीय विज्ञान, मसीही शिक्षा, आराधना, सुसमाचार प्रचार, कलीसिया गठन एवं प्रबंधन।

बाइबिलशास्त्र

1. प्रकाशन

प्रकाशन का अर्थ है पर्दा हटाना, सत्य को प्रगट करना, एवं रहस्योद्घाटन।

सामान्य प्रकाशन: Psa. 19:1-3; Act. 14:15-17; Rom. 1:18-20.

विशेष प्रकाशन: परमेश्वर की उद्धार योजना से संबंधित। यह व्यक्तिगत एवं वाचिक दोनों ही हैं।

बाइबिल: लिखित वचन। सम्पूर्ण ऐतिहासिक जानकारी (वंशावली, वाचाएं, व्यवस्था, घटनाएं), साहित्य (गद्य एवं काव्य), भविष्यद्वाणी, व्याख्या (उदाहरण: पत्रियाएं), जो परमेश्वर का उद्धार संबंधित योजना की समझ हेतु हमारे लिए आवश्यक है।

स्वप्न, दर्शन, भविष्यकथनों को लिखित वचन से तालमेल बनाए रखना चाहिए (Gal. 1:8-9).

प्रभु यीशु मसीह: परमेश्वर के प्रकाशन की परिपूर्णता (Heb. 1:2-3)

प्रबोधन या प्रदीप्ति: मनुष्य के आत्मा में पवित्रात्मा के द्वारा रेमा (*rhema*) का प्रकाशन, जिसके द्वारा मनुष्य सत्य की समझ प्राप्त कर पवित्रात्मा के विश्वास के वरदान के द्वारा उसका प्रतियुत्तर देता

है। यह प्रकाशन का आत्मगत पहलु है। यह प्रबोधन सम्पूर्ण लिखित वचन एवं मसीह में प्रकाशन की परिपूर्णता से तालमेल रखता है (Joh. 14:26; Joh. 16:15). अनिवार्य (1Co. 2:11).

## 2. लेखन का उद्देश्य (Woodrow Kroll)

अ. परिशुद्धता हेतु: बाइबिल में परमेश्वर के प्रकाशन बयानों का दर्ज परिशुद्ध रूप में किया गया है।

आ. प्रसारण हेतु: लिखित वचन संदेश को फैलाता है।

इ. परिरक्षण हेतु: शब्दों को लिखित रूप में परिरक्षित किया गया है।

## 3. बाइबिल की विश्वसनीयता

अ. ऐतिहासिक सत्यता

आ. भविष्यकथनों की सटीकता

इ. अभिलेखों की प्रामाणिकता

ई. व्यावहारिक — यह प्रयोजनकार हैं

उ. वैज्ञानिक परिशुद्धता

ऊ. दार्शनिक सुसंगतता

## 4. प्रेरणा

प्रेरणा के विषय अलग—अलग सिद्धांत

1. यांत्रिक या श्रुतलेखन: परमेश्वर के प्रकाशन के प्रसारण में लेखक मात्र एक निष्क्रिय यंत्र है। मानवीय त्रुटियों से सुरक्षित रखने के लिये उसके व्यक्तित्व को बर्खास्त कर दिया जाता है।

2. आंशिक प्रेरणा: केवल वे ही सिद्धांत प्रेरणाधारित हैं जिनसे मानव लेखक अनभिज्ञ थे। परमेश्वर ने विचारों को प्रगट किया जिनहें लेखकों ने अपने अपने शब्दों में लिखा।

3. प्रेरणा की श्रेणियां: कुछ बाइबिल के भाग अन्य भागों से अधिक और अलग रूप में प्रेरित हैं।

4. अंतर्ज्ञान या स्वाभाविक प्रेरणा: असाधारण अन्तर्दृष्टि रखने वाले प्रतिभाशाली व्यक्तित्वों को परमेश्वर ने बाइबिल लिखने के लिए

चुना। प्रेरणा कोई कलात्मक क्षमता या प्राकृतिक वरदान के समान ही है।

5. प्रदीप्ति या रहस्यात्मक प्रेरणा: लेखक परमेश्वर द्वारा शास्त्रों को लिखने के लिए सक्षम बनाए गए थे। पवित्रात्मा ने उनके सामान्य शक्तियों को बढ़ा दिया।

6. शाब्दिक एवं पूर्ण प्रेरणा: शास्त्रों के निर्माण में ईश्वरीय एवं मानव तत्व दोनों उपस्थित थे। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र, हर वचन सहित, परमेश्वर के मन का उत्पादन है जो मानव शब्द एवं समझ अनुरूप अभिव्यक्त किया गया है।

**2Ti. 3:16 (Theopneustos):** परमेश्वर के सांस से दिया गया

प्रेरणा न ता यांत्रिक है न तो श्रुतलिखित परन्तु वह जैव है, अर्थात् इसमें लेखकों का व्यक्तित्व उपस्थित था। वे आत्मा के चलाए गए थे

**(Phero) (2Pe. 1:21)**

प्रेरणा शाब्दिक है; वह शब्दों तक वितृत है, केवल विचारों तक सीमित नहीं।

प्रेरणा सम्पूर्ण है; अर्थात्, परिपूर्ण 'हर एक पवित्रशास्त्र...' समान रूप में।

भ्रमातीतत्व: यह सत्यापन एवं अन्यथाकरण के लिये खुला है और प्रकाशित सत्य के संचार में पूर्णतः परिपूर्ण हैं।

निर्भ्रान्तता: इसमें कोई भी भ्रान्तियां नहीं हैं। संपूर्ण निर्भ्रान्तता: बाइबिल अपने शिक्षाओं एवं बयानों में पूर्णतः सत्य है।

अन्य विचारधाराएं:

सीमित निर्भ्रान्तता: यह केवल उद्धार संबंधित वाक्यों में निर्भ्रान्त है।

सोद्देश्यरूपी निर्भ्रान्तता: परमेश्वर के साथ मनुष्यों का मेल कराने का उद्देश्य में वह अचूक हैं।

अप्रासंगिक: यह सिद्धांत अप्रासंगिक है। बाइबिल के उद्देश्य को ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

7. बाइबिल शाश्वत एवं परिपूर्ण है।

8. कैनन: शाब्दिक अर्थ: नापने वाली छड़ी, मापदण्ड। कैननीयता, कैननीय, कैननीकरण

यह शब्द इब्रानी एवं यूनानी भाषा से आयी है और इसका अर्थ है सरकण्डा या बेंत, अर्थात् ऐसे कोई वस्तु जो सीधा हो, या सीधा रखे जाने वाली वस्तु। अतः इसका तात्पर्य हो जाता है: मापदण्ड, या वह जिसे मापा या नापा गया हो। इसे शास्त्रों के लिए उपयोग में इसलिए लाया गया क्योंकि यह जताया जाए कि इन्हीं में विश्वास और व्यवहार एवं सिद्धांत और कर्तव्य के निमित्त अधिकृत मापदण्ड है।

पाँच मापदण्ड: 1. ग्रन्थकारिता — क्या यह भविष्यद्वक्ता, प्रेरित, अथवा पवित्र जन के द्वारा लिखा गया है? 2. स्थानीय कलीसिया द्वारा स्वीकृति 3. कलीसिया के प्रवर्तकों द्वारा पहचान 4. विषय वस्तु सैद्धांतिक रूप में सही हो 5. व्यक्तिगत आत्मिक उन्नति के लिये लाभदायक हो।

पुराना नियम का कैनन या पुस्तक संग्रह मसीह एवं प्रेरितों द्वारा स्वीकृत रूप में स्वीकार किया गया है।

नया नियम का कैनन या पुस्तक संग्रह प्रेरिताई ग्रन्थकारिता एवं कलीसिया के प्रवर्तकों के द्वारा उनकी स्वीकृति के आधार पर स्वीकार किया गया है।

कारथैज़ के तृतीय परिषद (397 ईस्वी) में 27 नये नियम के पुस्तकों को कैननीय घोषित किया गया। संत अथनैशियस (297–373 ईस्वी) ने अपने 39 वे पास्कल पत्र (367 ईस्वी) में नये नियम के पुस्तकों को जिस रूप में आज हम उन्हें जानते हैं उस रूप में सूचीबद्ध किया।

9. बाइबिल में उसके विषय में प्रयोग किये गए प्रतीक

1. तलवार (Heb. 4:12) 2. हथैड़ा (Jer. 23:29) 3. बीज (1Pe. 1:23) 4. दर्पण (Jam. 1:23-25) 5. आग (Jer. 23:29, Jer. 20:9) 6. दीपक (Psa. 119:105) 7. भोजन (1Pe. 2:2) 8. जल (Eph. 5:25-27) 9. दूध (1Pe. 2:2) 10. मांस (Heb. 5:12) 11. रोटी (Mat. 4:4) 12. चांदी (Psa. 12:6)

10. अन्य नाम

यहोवा की पुस्तक (Isa. 34:16); सत्य की पुस्तक (Dan. 10:21); शास्त्र (Joh. 10:35, Mat. 21:42); पवित्रशास्त्र (Rom. 1:2); पवित्र पुस्तकें (Dan. 9:2; Heb. 10:7); परमेश्वर के वचन (Rom. 3:2), परमेश्वर का वचन (Heb. 4:12); परमेश्वर के जीवित वचन (Act. 7:38)

11. बाइबिल का प्रभाव: हमारे विचार, जीवन, मूल्य, एवं नियति पर।

12. बाइबिल का अधिकार: मानव बुद्धि पर, कलीसिया पर, हमारे अनुभव पर, एवं हर मसीही पर।